भाग - 2

पूज्य गुरुदेवश्री आजन्म वैरागी थे। बचपन से ही कोई भी अनुकूल या प्रतिकूल लौकिक प्रसंगों में संसार-संयोग के प्रति सदा उपेक्षा रहती। आपश्री न्याय के बिना बलजोरी से कोई बात स्वीकार नहीं करते थे। प्रत्येक समय विचिक्षण निरीक्षण यह खास गुण था। लघुवय से ही आपश्री को निरन्तर सत्य की शोध रहती और इस बात की खटक रहती कि मैं जिसकी शोध में हूँ, वह मिला नहीं और जो मिला है, उसमें मुझे सत्य दिखाई नहीं देता। इस भव में मुझे मेरे आत्मा का हित कर लेना है, ऐसी धुन भी सदा रहती। संयोगों के प्रति उपेक्षावृत्ति, सत्य की शोध और आत्महित की धुन के कारण आपश्री को अलौकिक तत्त्व हाथ में आया और उसकी मीठी-मधुर बंसुरी सुवर्णपुरी में ऐसी तो बजायी कि देवों को भी आश्चर्य हुआ। भव्य लोगों के झुण्ड के झुण्ड इस अध्यात्म बंसुरी के सुर सुनकर डोलने लगे। चलो, हम सब भी वह सुर सुनने जायें.....

कहाने अेवी बंसरी बजावी के, आत्मनाद गजाव्या उजमबा;
थयो धर्मधुरंधर धोरी ने जगतारणहारो उजमबा....

★★★★★

कहान गुरुअे बंसरी बजावी, मीठां अे बंसरीना सुर...
सुवर्णपुरे कहान पधार्यां....

मीठां आ सूर अहीं आव्या छे क्यांथी, जाग्यो छे अेक कोई संत... सुवर्णपुरे... १
चालो सहु अे सुणवा जईअे, मीठां आ बंसरीना सूर... सुवर्णपुरे... २
अवधूत अलख जगाडनार संत आ, देवोने आश्चर्य थाय... सुवर्णपुरे... ३
अध्यात्मरसनो रसीलो संत आ, श्रुतसागर ऊछल्या महान... सुवर्णपुरे... ४
पाकया छे युगप्रधानी संत आ, सेवकने हरख न माय... सुवर्णपुरे... ५
अेवा संतनी चरणसेवाथी, भवना आवे छे अंत... सुवर्णपुरे... ६
पंचमकाळे अहोभाग्य खील्यां छे, वंदन होजो अनंत... सुवर्णपुरे... ७

★★★★★

अवनि उद्धारवा, भव्योने तारवा, तारो अवतार...
कहान तारी बंसीमां, डोले नरनार...

सत्यने स्थापवा, असत्यने उथापवा; थयो भरतमां तारो अवतार... कहान... १

आत्म उद्धारवा, भवसागर तारवा; जिज्ञासु जीवनो साचो सरदार... कहान... २

अज्ञान मिटाववा, ज्योति प्रगटाववा; ज्ञानामृत सींची जीवन देनार... कहान... ३

आत्मद्रष्टि आपतो, जडता उथापतो; अज्ञानी अम पर तारा उपकार... कहान... ४

आत्मस्वरूपे लीन, जगथी उदासीन; साचुं पवित्र तुं जीवन जीवनार... कहान... ५

जिनशासन काज, धर्म उद्धारवा ज; डंको वगाड्यो तें भरत मोझार... कहान... ६

★★★★★

इस प्रकार एक आत्मार्थसाधक सन्त भव्यों को तारने के लिये सुवर्णपुरी में पधारते हैं और आत्मा की अलख जगाकर भव्य जीवों को मोह निद्रा से जगाते हैं। आपश्री के पावन चरणों से सुवर्णपुरी पवित्र अध्यात्म तीर्थधाम बनता है। सर्व के हित की बात आपश्री की वाणी में ऐसी तो आती है कि मानो अमृत की धार!

आपश्री के दर्शनमात्र से सुपात्र जीवों को सत् की रुचि जगती है और वाणी से तो हृदय परिवर्तित हो जाता है। मेघगर्जना समान वाणी से स्व-पर का भेदज्ञान करने की विधि बताकर और क्रमबद्ध के सिद्धान्त द्वारा आत्मा का अकर्ता—ज्ञातास्वरूप समझाया।

हे परमोपकारी! हम हमारा सर्वस्व—तन, मन, धन, समस्त—अर्पण करें तो भी आपश्री के उपकारों का बदला चुका सकें, ऐसा नहीं है। वीतराग सर्वज्ञ परमात्मा का मूल धर्म-मार्ग आपश्री ने हमें दिया—बताया है, उसका प्रति-उपकार चुकाने में हम सर्वथा असमर्थ हैं।

सुवर्णपुरे वस्या अेक संत, पधार्यां भव्योने तारवा...
जेनां पगलांथी कण कण पावन, बन्युं सुवर्ण तीर्थधाम... पधार्यां.. १

अपूर्व अलख कोई अेणे जगाड्यो, जगाड्यां अनेक भव्य जीव... पधार्यां.. २
सोळ कळाअे ज्ञानसूर्य प्रकाश्यो, प्रकाश्यो चैतन्यराज... पधार्यां.. ३
जेनी मुद्रामां शांतरस छवाणा, वाणीमां अमीरस धार... पधार्यां.. ४
अंतरपटमां गूढता भरी छे, कळवी महा मुश्केल... पधार्यां.. ५
अंतरहृदयमां करुणानो पिंड छे, द्रढतानो नहि पार... पधार्यां.. ६
दर्शनथी सत् रुचि जगे छे, वाणीथी अंतर पलटाय... पधार्यां.. ७
सद्गुरुदेवा अमृत पीरसतां, सेवक वारी वारी जाय... पधार्यां.. ८
सिंहकेसरीना सिंहनादेथी, हलाव्युं छे आखुं हिंद... पधार्यां.. ९
सुवर्णपुरीमां नित्य नित्य गाजतां, आत्मबंसी केरा सूर... पधार्यां.. १०
ज्ञाता-अकर्तानुं स्वरूप समझावे, स्व-परनो बतावे भेद... पधार्यां.. ११
कल्पवृक्ष अम आंगणे फळियुं, मनवांछित दातार... पधार्यां.. १२
श्री गुरुदेवनी चरणसेवाथी, भवना आवे छे अंत... पधार्यां.. १३
तन-मन-धन प्रभु चरणे अर्पुं, तोये पूरुं नव थाय... पधार्यां.. १४

★★★★★

सुवर्णपुरी के सन्त ने सुवर्णपुरी में पधारकर भक्तों के आँगन तो पावन किये। परन्तु कहाँ विराजमान हुए? अद्भुत योगीराज का साधनास्थान कौन सा था? उसका नाम क्या था? आपश्री ने वहाँ विराजकर क्या किया? चलो, इन प्रश्नों का समाधान करते हैं।

ज्ञानामृत भरपूर और शूरवीर ब्रह्मचारी कहान गुरुदेवश्री ने सुवर्णपुरी में जहाँ विराजकर स्वाध्याय और आराधना की, उस साधनाधाम का नाम है 'स्वाध्यायमन्दिर'। अहो! नाम भी कैसा सार्थक है! क्योंकि आपश्री ने वहाँ विराजकर निरन्तर साधना और शास्त्र स्वाध्याय ही किया। तथा सवेरे-दोपहर के प्रवचनों द्वारा भेदज्ञान की वीणा बजायी, प्रत्येक द्रव्य की स्वतन्त्रता का शंखनाद फूँका और ज्ञान के बाजे बजाये।

तीर्थंकर की दिव्यध्वनि के अवयवरूप तथा अमृतमय मेघसमान वे प्रवचन सुनते ही भव्यमयूर आनन्द से नाच उठे और भक्तों के हृदय सरोवर में ज्ञानकमल खिलने लगे।

हे अचिन्त्य प्रज्ञावन्त गुरुदेवश्री! हम अल्प मतिवन्त आपश्री की महिमा क्या करें? आपश्री ने हमारे ज्ञातास्वभाव में ही आनन्द, ज्ञान, वीर्य आदि सर्व कल्याणकारी भाव पड़े हैं, ऐसी श्रद्धा-प्रतीति कराकर तथा सर्व जीवों का अकर्ता स्वभाव है, ऐसा विश्वास जगाकर कर्तापने का—कर्तृत्वबुद्धि का-अभिमान का चूरचूर कर दिया है। आपश्री ने अनन्त तीर्थंकरों और आचार्यों-ज्ञानियों के मार्ग का उद्योत करके उनके कुल को दिप्त किया है। आपश्री ने तीर्थंकरों के कुल की राह को यथार्थरूप से सम्हाल कर रखा है, अकबन्ध रखा है। हे सर्वोत्कृष्ट उपकारी! आपश्री जगत शिरोमणि हो, जगत्पृज्य वन्दनीक हो, सीमन्धरदूत और वीरलघुनन्दन हो तथा कुन्दकुन्ददेव के परम भक्त हो। आपश्री सदा जयवन्त वर्तो! विजयवन्त रहो! आपश्री के श्रीमुख से निज ज्ञायकस्वरूप सुनकर हम सर्व भक्त हमारा जीवन कृतार्थ करेंगे। पवित्र-पावन-निर्मल और शुद्ध करेंगे।

वागे छे ज्ञानवाजां, गुरुराजनां मंदिरीये...
गुरुराजनां मंदिरीये, स्वाध्याय सुमंदिरीये... वागे छे ज्ञानवाजां... १
प्रभु सुवर्णपुरीमांही, अचिंत्य ज्ञान खीलवी;
सूक्ष्म न्यायो प्रकाशी, ज्ञानज्योतिने जगावी... वागे छे ज्ञानवाजां... २
मुखथी छूटे छे ध्वनि, अमृत समी अे वाणी;
सुणतां आनंद थाये, हृदय विकसित थाये... वागे छे ज्ञानवाजां... ३
दिव्यध्वनिना नाद छूट्यो, चारे दिशाअे प्रसर्यो;
महिमा करूं शी तेरी? अल्प मति छे मेरी... वागे छे ज्ञानवाजां... ४
श्री तीर्थधाम मांही, जयकार नाद गाजे;
अनुभव प्रकाशी आजे, सत् वस्तुने बतावे... वागे छे ज्ञानवाजां... ५
शुद्धज्ञान ज्ञाता मांही, श्रद्धा प्रतीत करावे;
अकर्तापणुं छे तारूं, अे वातने मलावे... वागे छे ज्ञानवाजां... ६

भगवान कुंदकुंदनुं, शासन वर्ते छे जयवंत;
तुज कुळने दिपाव्युं, गुरु कहानदेव विजयवंत... वागे छे ज्ञानवाजां... ७

जगतशिरोमणि छो, जगपूज्य वंदनीक छो;
वीतरागदेव वीरनां, गुरु आप लघुनंदन छो... वागे छे ज्ञानवाजां... ८

इन्द्रो अने नरेन्द्रो, मांहो मांहे वात करता;
आ भरतक्षेत्र मांही, अे वीर कोण जाग्यो ?... वागे छे ज्ञानवाजां... ९

चालो सहु मळीने, सुवर्णपुरी जईअे;
ज्ञायकस्वरूप सुणीने, जीवन कृतार्थ करीअे... वागे छे ज्ञानवाजां... १०

भक्ति करवाने तारी, शरणे आव्यो हुं वारी;
दीनहाथ ग्रहो कृपाणु, मुज रंकने ऊगारी... वागे छे ज्ञानवाजां... ११

★★★★★

हे अनुपम साधक! आपश्री का जीवन कैसा अलौकिक अद्‌भुत था! आपश्री के निरन्तर ज्ञान-वैराग्य से रंगे हुए और अतीन्द्रिय सुख का रसपान करनेवाले सुखरसिया थे। भेदविज्ञान के अपूर्व पुरुषार्थ द्वारा सहज स्वरूप को प्राप्त हुए थे। ऐसे विरल गुरुदेवश्री को हम पूर्व के महापुण्य से पाकर धन्य बने हैं। बस, अब एक ही भावना है कि आपश्री की कल्याणकारी वाणी सुनकर, निज ध्येय तत्त्व को दूसरे से पृथक् जानकर, इस भवसमुद्र में से हमारे आत्मा को उभार लें। आपश्री ने आत्मसाधना के अजर-अमर प्याले पीये हैं और हमें भी पिलाये हैं। हमारी पर्याय-पर्याय में व्याप्त आपश्री के यह उपकार कभी विस्मृत होनेवाले नहीं हैं, हो सकें ऐसा नहीं है। हम जैसे पामर जीवों को उभारने के लिये आपश्री निरन्तर मीठे मंगल आशीष प्रदान करते रहो, सदा निष्कारण करुणा का प्रपात बरसाते रहो और हम भक्तों पर निरन्तर अमीदृष्टि रहे, यही प्रार्थना है।

गुरु मारो ज्ञान वैराग्ये रंग्यो रे, चैतन्य सुखनो रसियो... गुरु...
उत्तम संस्कारोने कारणे, सहज स्वरूपे ठर्यो रे;
भेद विज्ञाने अजोड पुरुषार्थे, केवो मस्त बन्यो रे... गुरु... १
महा पूर्व पुण्यना उदये, आवो विरलो गुरु मळीयो रे;
अेनी वाणीथी ध्येय समझी, निज आत्म लऊं उगारी... गुरु... २
बाळब्रह्मचारी सम्यक् धारी, ज्ञान दशाअे खील्यो रे;
अजर प्याला पीवे पीवडावे, जिनेन्द्र भक्तिमां भींज्यो रे... गुरु... ३
मीठां मीठां आशिष देजो, अम जेवाने उगारवा;
आतमलक्ष्मीनो लाभ करावी, आ काफलो सिद्धपुर पहोंचाडजो... गुरु...४

★★★★★

हे जगततारणहार! आपश्री की भक्तों को निर्भय-निडर बनाती पवित्र वाणी प्रचुर प्रीतिसहित सुनकर, मनन करके, अतीन्द्रिय अलौकिक आत्मज्ञान प्राप्त करें और पश्चात् निज ज्ञायकस्वरूप में पूर्ण लीनता करके केवलज्ञान प्राप्त करें, यही अभिलाषा है।

हे गुरुराज! आपश्री ज्ञान के समुद्र और समता के सागर हो। आपश्री के उपकारों की याद कितनी बनायें? पृथ्वी जितना कागज लें, वन के वृक्षों की कलम बनायें और समुद्रों के नीर की स्याही बनायें तो भी आपश्री के गुण-उपकार वर्णन किये जा सकें, ऐसा नहीं है। बस, लाखों बार, करोड़ों बार, अनन्त बार वन्दन.... प्रणमन.... अभिवन्दन....

सुखशांति प्रदाता, जगना त्राता, कहान गुरु महाराज;
जनभ्रांति विधाता, तत्त्वोना ज्ञाता, नमन करूं छुं आज...
जडतानो आ धरणी ऊपर, हतो प्रबळ अधिकार;
कर्यो उपकार अपार प्रभु! तें, प्रकाश्या शास्त्र उदार रे... सुख...१
वरसावी निज वचन सुधारस, कर्यो सुशीतल लोक;
समयसारनुं पान करीने, गयो मानसिक शोक रे... सुख...२

गुरुवाणीनुं मनन करीने, पामुं अलौकिक भान;
क्षणे क्षणे हुं ज्ञायक समरुं, पामुं केवणज्ञान रे... सुख...३
तारुं हृदय गुरु! ज्ञान-समतानुं, रह्युं निरंतर धाम;
उपकारोनी विमल यादीमां, लाखो वार प्रणाम रे... सुख...४

★★★★★

हे मंगलकारी गुरुदेवश्री! आपश्री ने दूर... दूर... दूर के देश में विहार किया है, परन्तु हमारे अन्तर में से एक समयमात्र भी दूर नहीं गये—हटे नहीं। हमारे हृदयसिंहासन पर आपश्री को विराजमान किया है, वहाँ से आपश्री किस प्रकार दूर जा सकोगे? भावना भरे भक्तों को किस प्रकार तड़पड़ाते छोड़ सकोगे? अहोरात्र निरन्तर हम आपश्री के पावन दर्शन और चरणसेवा की राह देखते हैं। आशा ही नहीं, अन्तर का दृढ़ विश्वास है कि एक दिन तो मंगलमय दर्शन देने और स्वानुभवसभर वाणी बरसाने आपश्री पुनः यहाँ पधारोगे.... पधारोगे.... और पधारोगे ही....

विदेहवासी कहानगुरु भरते पधारो रे...
सुवर्णपुरीमां नित्ये चैतन्यरस वरसावो रे...
निशदिन गुरुजीनी वाट अमे जोतां,
अम अंतरियामां दर्शननी आशा;
सुवर्णे पधारो पुनः कृपाणुदेवा रे...
अनुभववाणी ने दर्शन देवा रे...
भव भव होजो गुरुचरणोनी सेवा...

★★★★★

हे चन्द्रमा! हम भक्तों का एक भावना भरा सन्देश गुरुदेवश्री को पहुँचायेगा न? हमारा इतना पुण्य नहीं कि प्रत्यक्ष समागम हो—मिलने का योग बने और देवयोग से पंख मिले नहीं कि जिससे उड़कर उनके चरणकमल में पहुँचें। इसलिए हम सेवकों की प्रेमभरी विनती सुनाना।

चन्द्रमा प्रश्न पूछता है : शासनशृंगार गुरुदेवश्री कहाँ विराजमान होंगे ?

उत्तर : हे शशिवर ! इन्द्र समान शोभित वे देव स्वर्गपुरी के वैमानिक स्वर्ग में विराजमान हैं। कदाचित् वहाँ न मिले तो जम्बूद्वीप के पूर्वविदेहक्षेत्र में जाना। श्री सीमन्धर भगवान के समवसरण में जहाँ वैमानिक देवों की सभा है, वहाँ हमारे तारणहार गुरुदेवश्री की बैठक होगी।

प्रश्न : गुरुदेवश्री को पहिचानना किस प्रकार ?

उत्तर : जिन्हें सीमन्धर प्रभु के दर्शन से अपार तृप्ति हुई है और जो प्रभु की दिव्यध्वनि की अमृतधार भावविभोर होकर, भावना से भींगकर झेलते हैं, वे ही हमारे गुरुवर !

प्रश्न : परन्तु सन्देश क्या देना है ?

उत्तर : हे आदर्श साधक गुणमूर्ति गुरुवर ! आपश्री सेवकों को छोड़कर चले गये हो—नयनों से दूर हुए हो, परन्तु हमारे अन्तर में तो अभी भी नित्य विराज रहे हो। हम सर्व हमारे ज्ञाननयन द्वारा आपश्री के दर्शन निरन्तर करते हैं। जो कुछ अब अल्प भव बाकी हैं, उनमें आपश्री का सान्निध्य-शरण हो, आपश्री की निश्रा हो, आपश्री के चरणकमल का सेवन हो और आपश्री की कल्पवृक्ष समान शीतल छाया में आत्मसाधना-आराधना-उपासना हो। हे अनन्त उपकारी भावी भगवन्त ! हम सब आपश्री के बालक—भक्तजन निश्चितरूप से, सुनिश्चितरूप से, अवश्य आपश्री ने बताये हुए निज परम पारिणामिकभाव की—पंचम भाव की—शुद्धात्मा की साधना साधकर सादि-अनन्त काल सिद्धालय में आपश्री के साथ और आपश्री के पास अनन्त-अनन्त समाधिसुख को अनुभव करेंगे।

चांदलिया! संदेश देजे गुरुदेवने,
वसी रह्यां छे स्वर्गपुरीने धाम जो;
वैमानिक स्वर्गे मुज गुरुजी बिराजतां,
इन्द्र सरीखा शोभी रह्यां अे देव जो... चांदलिया... १

विदेहमां स्वर्गेथी गुरुजी पधारतां,
सीमंधरदर्शनथी तृप्ति अपार जो;
वैमानिक परिषदमां गुरुवर बेसणां,
भावभीनां झीले ध्वनि अमृतधार जो... चांदलिया... २

गुरुजी! तारा पड्या विरह वसमा घणा,
तारणहार थयां नयनोथी दूर जो;
सेवकने छोडी गुरुजी चाल्यां गयां,
अंतरमां तो नित्य बिराजो नाथ! जो... चांदलिया... ३

भवभवमां हो तुज चरणोनी सेवना,
अनंत उपकारी भावी भगवंत जो;
शुद्धात्माना शरणे साधी साधना,
नित्ये रहेशुं देव-गुरुनी साथ जो... चांदलिया... ४

★★★★★

हे प्रियवर कहानगुरुदेव! आपश्री तो तीर्थंकर और गणधरों के देश में बसनेवाले थे। हमारे ऊपर परम करुणा करके हम जैसे रंक-पामर के आँगन में पधारे थे। तथापि न तो हमने मन-वचन-काया द्वारा पूर्ण अर्पणता की या न तो आपश्री की निष्कारण करुणा का लाभ लिया। इस दोष की क्षमा करके आपश्री पुनः पधारो, ऐसी विनय करते हैं। हे अध्यात्मकल्पवृक्ष! चैतन्यचिन्तामणि! आपश्री के गुण क्या गायें? अरे! इस काल में आपश्री के दर्शन मिलना भी दुर्लभ थे, तथापि आपश्री ने इस पंचम काल में अतिशय गहरे और गम्भीर रहस्यमय सत्यवाणी की अमृतवर्षा बरसायी थी। आपश्री तो

जिनवाणी माता के अनमूल्य पुत्र थे और आत्मार्थी जीवों के अनुपम नेत्र थे। आपश्री पुनः फिर से अमृतवाणी बरसाने और दर्शन देने पधारो... पधारो.... पधारो....

कहानगुरुजी! वहाला पुनः पधारजो!...
सीमंधर-गणधरनां सत्संगी तमे,
आव्यां रंकधरे शो पुण्यप्रभाव जो;
अर्पणता पूरी ना अमने आवडी,
लेश न लीधो उरकरुणानो लाव जो... कहानगुरुजी... १

सत्यामृत वरसाव्यां आ काळे तमे,
आशय अतिशय उंडा ने गंभीर जो;
नंदनवन सम शीतल छांय प्रसारतां,
ज्ञानप्रभाकर प्रगटी ज्योत अपार जो... कहानगुरुजी... २

अणमूला सुतनुओ शासनदेवीनां,
आत्मार्थीनी एक अनुपम आंख जो;
संत सलूणा! कल्पवृक्ष! चिंतामणि!
पंचम काळे दुर्लभ तव दिदार जो... कहानगुरुजी... ३

★★★★★

गुणसागर गुरुदेवश्री के गुणों की गाथा किस प्रकार लिखी जा सकती है? कही जा सकती है? वर्णन की जा सकती है? अक्षर थोड़े हैं, काल अल्प है, मति न्यून है और गुण अनन्त—बेहद—अपार—अपरिमित है। इसलिए आपश्री के गुण मुख से कहे जा सकनेयोग्य नहीं तथा अक्षर द्वारा लिखे जा सकें, ऐसा नहीं। वह तो जिसकी होनहार उज्ज्वल है, वही मंगलकारी गुरुदेवश्री का नाम एकाग्र चित्त होकर लेता है और आपश्री के पवित्र गुणों का ध्यान करता है तथा उसे ही वे गुण अन्तर में पहिचाने जाते हैं और प्राप्त होते हैं।

बारम्बार पूज्य गुरुदेवश्री के भक्त विनती करते हैं कि हे तारणहार! मेरी

आत्मपरिणतिरूपी शुद्ध गली में आपश्री पधारो। मैं आपश्री की राह देखता हूँ। मैं अब स्वच्छन्दता छोड़कर आपश्री के चरणकमल में मेरा सर्वस्व अर्पण करता हूँ। आपश्री के विरह की वेदना मुझसे सहन नहीं हो सकती। आपश्री के विरह में मुझे एक घड़ी तो एक युग जैसी हो पड़ी है। हे सवकशृंगार! हे ज्ञाननिधि! ज्ञान प्रगटाने के लिये, मुझे पावन करने और त्रिविध ताप को टालने के लिये शीघ्रातिशीघ्र हमारे आँगन में सुवर्णपुरी में पधारो... पधारो... पधारो....

मारा जीवन तणी शुद्ध शेरीअे गुरु आवोने,
हुं तो जोऊं वालमनी वाट मारा घेर आवोने... १

मारा चंदनना चित्त चोकमां गुरु आवोने,
मारा आतम सरोवर घाट मारा घेर आवोने... २

में छोडी स्वच्छंदता माहरी गुरु आवोने,
गुरु चरणे कर्युं दिल डुल मारा घेर आवोने... ३

मने व्यापी विरह तणी वेदना गुरु आवोने,
माराथी खमी न खमाय मारा घेर आवोने... ४

मारे अेक घडी अेक युग थई गुरु आवोने,
गुरु दरशन देवाने दयाळ मारा घेर आवोने... ५

ज्ञाननिधि ज्ञान प्रगटाववा गुरु आवोने,
मने पावन करो धरी पाद मारा घेर आवोने... ६

तमे मारा नयननां तारला गुरु आवोने,
मारा हैयाना अणमूला हार मारा घेर आवोने... ७

आ त्रिविध तापने टाळवा गुरु आवोने,
संत सेवक तणा शणगार मारा घेर आवोने... ८

★★★★★